Toppersnotes
Unleash the topper in you

IAS

संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर - 1 || भाग - 2

SIERRA INNOVATIONS

विषय-सूची

विश्व का इतिहास

1.	परिचय	1
2.	आधुनिक पश्चिमी संस्कृति	5
3.	अमेरिकी क्रांति	14
4.	फ्रांस की क्रांति	22
5.	1815 के पश्चात यूरोप	31
6.	औद्योगिक क्रांति	49
7.	प्रथम विश्व युद्ध	67
8.	रूस की क्रांति	80
9.	विश्व अर्थव्यवस्था का विकास और आर्थिक मंदी	85
10.	फासीवाद	89
11.	द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विश्व	99
12.	शीत युद्ध	107

विश्व तथा भारत का भूगोल

13. विश्व का भूगोल

- उत्तरी अमेरिका 113
- दक्षिणी अमेरिका 123
- अफ्रीका 129
- यूरोप 136
- एशिया 142
- आस्ट्रेलिया 145

14. भारत का भूगोल 148

परिचय

विश्व इतिहास की पद्धति (अध्ययन)

पाठ्यक्रम के अनुसार विश्व इतिहास के अध्ययन के क्रम में हमें दो शताब्दियों के इतिहास का अध्ययन करना है अर्थात् 18वीं सदी के राष्ट्रीय राज्य के उद्भव की घटना से लेकर 20वीं सदी के अन्त में शीत युद्ध की समाप्ति तक के भाग का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के क्रम में निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है –

1. प्रत्येक टॉपिक को स्वतंत्र रूप में भी देखना है । साथ ही उस तैयार टॉपिक को विश्व इतिहास के विकास से जोडकर देखना है । उदाहरण के लिए प्रबोधन एक ऐसी घटना है । जिसकी पृष्ठभूमि 16वीं सदी के पुनर्जागरण व्यावसायिक क्रांति तथा 17वीं सदी की वैज्ञानिक क्रांति ने तैयार की थी । फिर प्रबोधन ने अमेरिकी क्रांति और फ्रांस की क्रांति के बीच भी एक प्रकार का आंतरिक संबंध है । अमेरिकी क्रांति न केवल अमेरिका तक बल्कि यूरोप पर भी अपना प्रभाव छोडा उसने फ्रांस की क्रांति में प्रेरणा प्रदान करी आगे फ्रांस की क्रांति ने सम्पूर्ण यूरोप को परिवर्तित कर दिया ।

   फ्रांस की क्रांति की दो प्रमुख वैचारिक विरासत है वह है । उदारवाद एवं राष्ट्रवाद उदारवाद का बल एक प्रतिनिधात्मक सरकार पर था । वही राष्ट्रवाद ने आत्मनिर्णय के अधिकार की माँग की । राष्ट्रवाद एक ऐसी विचारधारा थी जिसने 19वीं सदी में यूरोप को और 20वीं सदी में एशिया और अफ्रीका को आंदोलित कर दिया । राष्ट्रवाद ने उग्रराष्ट्र वाद का रूप ले लिया जिसका एक महत्वपूर्ण परिणाम था विश्व युद्ध ।

   इस प्रकार पढने के क्रम में एक टॉपिक को दूसरे टॉपिक से जोडकर देखने की जरूरत है तभी विश्व इतिहास का स्वरूप स्पष्ट होगा ।

2. फिर विश्व इतिहास के अध्ययन के क्रम में हमारा बल आर्थिक सामाजिक परिवर्तन को रेखांकित करने पर होना चाहिए तथा हमें इस बात को भी रेखांकित करना चाहिए कि इस परिवर्तन का क्या प्रभाव पडा ?
   उदाहरण के लिए मध्यकालीन यूरोप में सामंती अर्थव्यवस्था कायम थी परंतु जब व्यावसायिक क्रांति आरम्भ हुई तो सामंती अर्थव्यवस्था का पतन हो गया तथा यूरोपीय अर्थव्यवस्था में गतिशीलता आयी एवं मुद्रा अर्थव्यवस्था और नगरों का विकास हुआ । इस आर्थिक परिवर्तन ने सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन दिया। इसके परिणामस्वरूप और कुलीनों का पतन हो गया और एक नये वर्ग के रूप में व्यापारी अथवा मध्यवर्ग का विस्तार हुआ। मध्यवर्ग ने नवीन विचारधारा को समर्थन किया अतः पुनर्जागरण का विस्तार हुआ ।
   उसी प्रकार आगे 17वीं सदी में ब्रिटेन में कृषि क्रांति तथा वैज्ञानिक क्रांति हुई इससे मध्य वर्ग की स्थिति और भी मजबूत हुई । फिर 18वीं सदी में सभी ने मिलकर ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति फैलाई तथा मध्य यूरोप तथा पूर्वी यूरोप औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप एक और मध्य वर्ग अधिक सशक्त बन कर उभरा इस कारण से राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद को प्रोत्साहन हुआ इस वर्ग ने नवीन विचार धारा को प्रोत्साहन दिया वह विचारधारा थी समाजवाद एवं मार्क्सवाद । अब समाजवाद एवं मार्क्सवाद ने आगे के परिवर्तन को बल प्रदान किया। इस प्रकार आर्थिक परिवर्तन ने सामाजिक परिवर्तन को बल प्रदान किया । इस कारण से वर्गीय समीकरण बदलता रहा यथा राज्य तंत्र बनाम कुलीन वर्ग, राज्य तंत्र बनाम मध्यवर्ग/कुलीन वर्ग/चर्च, निम्न वर्ग बनाम मध्य वर्ग आदि ।

यूरोपीय इतिहास की पृष्ठभूमि तथा प्रमुख शब्दावली एवं अवधारणा

राजनीतिक –

यूनानी और रोमन सभ्यता क्या थी

लगभग 2100 ई पू. में दक्षिणी पूर्वी यूरोप में यूनानी सभ्यता का विकास हुआ था । यह यूरोप की प्राचीनतम सभ्यता थी यूनानी सभ्यता के अंतर्गत छोटे-छोटे नगर राज्य स्थापित थे उदाहरण- एथेंस, स्पार्टा आदि आगे ईरानी आगमन और यूनानी आक्रमण के कारण यूनानी नगर राज्यों का पतन हो गया फिर इसी क्षेत्र के उत्तर में एक-दूसरी सभ्यता रोमन सभ्यता विकसित हुई थी तथा फिर आगे चलकर इसने कोई नया रूप नहीं लिया था । परन्तु रोमन सभ्यता ने एक साम्राज्य का रूप ले लिया ।

पश्चिमी रोमन साम्राज्य एवं पूर्वी रोमन साम्राजय में क्या अंतर था तथा इनका पतन किस प्रकार हुआ ?

ईसा की पहली शताब्दी तक रोमन साम्राज्य ने एक विशाल आकार ग्रहण कर लिया या फिर आगे इसके वृहत आकार के कारण इसका विभाजन हो गया । यह पश्चिमी रोमन साम्राज्य और पूर्वी रोमन साम्राज्य दो राज्यों में विभाजित हो गया। पूर्वी रोमन साम्राज्य को बिजेन्टीयन साम्राज्य कहा जाता था ।

तीसरी सदी से पश्चिमी रोमन साम्राज्य पर उत्तर से निरंतर जर्मन आक्रमण शुरू हो गया इसके कारण 5वीं सदी के अंत तक पश्चिमी रोमन साम्राज्य का विघटन हो गया तत्पश्चात् यूरोप में वर्ग व्यवस्था स्थापित हुई जिसे हम सामंतवाद के नाम से जानते थे ।

वही पूर्वी रोमन साम्राज्य अथवा बिजेंटीयन साम्राज्य 1000 वर्ष आगे तक चलता रहा । 15वीं सदी में सलेजुक तुर्कों ने बिजेंटीयन साम्राज्य पर आक्रमण किया इस आक्रमण के कारण बिजेंटीयन साम्राज्य और भी कब्जा कर लिया । विश्व इतिहास में इस घटना को कुस्तुनतुनिया के पतन के नाम से जाना जाता है कुछ विद्वान कुस्तुनतुनिया के पतन की घटना से आधुनिक युग का आरंभ मानते हैं ।

1. कुस्तुनतुनिया के पतन को आधुनिक युग के आगमन से क्यों जोडा जाता है ?

   जब कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का कब्जा हो गया तब भारत यूरोप के बीच जो भी प्रचलित व्यापारिक मार्ग थे, वे सभी अवरुद्ध हो गये । इस कारण से भारत मसाला व्यापार को धक्का लगा अब यूरोपीय व्यापारियों के लिए भारत से मसाला प्राप्त करना बहुत मुश्किल हो गया । वही दूसरी ओर इटली के व्यापरियों ने अवसर वादिता दिखाई तथा धर्म के मामले को नजर अंदाज कर उन्होंने व्यापारियों के साथ सांठ-गांठ कर ली तथा भारत के मसाले व्यापार पर एकाधिकार कायम कर लिया ।

   इस घटना के विरूद्ध यूरोपीय व्यापारियों ने तीव्र प्रतिक्रिया दिखाई फिर पुर्तगाल एवं स्पेन की सरकारों ने अपने व्यापारियों का साथ देते हुए इटली के व्यापारियों को एकाधिकार तोडने के लिए भौगोलिक खोज आरम्भ कर दी उन्होंने वैकल्पिक मार्ग से भारत की ओर पहुँचने का प्रयास किया दूसरी तरफ मामला धर्म का था, इसलिए रोम के पोप ने भी भौगोलिक खोज को समर्थन दिया इसी क्रम में कोलम्बस ने अमेरिका और वास्कोडिगामा ने भारत की खोज कर ली । अमेरिका तथा भारत की खोज विश्व इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना थी । इस खोज के परिणामस्वरूप पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया से लेकर उत्तरी अमेरिका एवं दक्षिणी अमेरिका तक एक बडे नेटवर्क का विकास हुआ । इस तरह 17वीं सदी में एक ग्लोबल इकोनॉमी अस्तित्व में आयी ।

2. पूर्वी रोमन साम्राज्य के समान्तर पवित्र रोमन क्या था ? इसने इतिहास पर क्या प्रभाव छोडा ?
जर्मन जनजातियों में फ्रैंको जनजाति ने एक विशिष्ट क्षेत्र में राज्य की स्थापना की उस राज्य का स्थापक चार्ल्स मार्टिन था । वह कैरोलिंजियन वंश का संस्थापक भी था । उसने इस्लामी सेना को पराजित किया था जिस कारण से उसके वंश की प्रतिष्ठा काफी बढ गई थी । उसी का आगे का उत्तराधिकारी शार्लमा हुआ ।
शार्लमा के अंतर्गत एक बडे साम्राज्य की स्थापना हुई । इस साम्राज्य में उत्तरी यूरोप और मध्य यूरोप का एक बडा भाग शामिल था । दूसरी ओर पोप इस्लामी शक्ति के विरुद्ध शार्लमा की सहायता चाहता था इसलिए उसने अपने हाथों से राजमुकुट उसके सर पर रख दिया । अतः घोषित किया कि आप पवित्र रोमन सम्राट हैं । इससे पवित्र रोमन साम्राज्य की अवधारणा विकसित हुई ।

सामंतवाद से तात्पर्य है ऊपर से नीचे तक मध्यस्थों की पूरी शृंखला का विकास । इसे पिरामिड नुमा ढाँचे के रूप में व्यक्त किया जाता है ।
इसकी पृष्ठभूमि जर्मन आक्रमण के क्रम में तैयार हुई थी वस्तुतः जर्मन आक्रमणकारियों ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य पर आक्रमण किया इस कारण से वह साम्राज्य टूट कर बिखर गया । जर्मन जनजातियों के मुखिया अलग-अलग क्षेत्र में विस्थापित हो गये । अतः लोगों से राजस्व प्राप्त करने का प्रयास करने लगे । बदले में वे अपने क्षेत्र में सुरक्षा प्रदान करते तथा कानून व्यवस्था को बनाये रखते । अब किसान जो भी उन्हें राजस्व देना स्वीकार किया बदले में वे अपने क्षेत्र में सुरक्षा प्रदान करते । इस प्रकार अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग क्षेत्रीय सरदार स्थापित हो गये फिर इनके बीच संघर्ष एवं समझौते के परिणामस्वरूप स्तरीकरण हो गया और फिर एक सामंत के अधीन दूसरे सामंत आ गये । बडे सामंत को राजस्व एवं सैनिक सेवा प्रदान करते। इस प्रकार सामंतीकरण पिरामिडनुमा ढांचा कायम हो गया । बडे सामंत और छोटे सामंत के संबंध अनुबंध पर आधारित थे ।

3. यूरोप में सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था क्या थी तथा इसका यूरोप पर क्या प्रभाव पडा ।
जैसा की हम जानते है कि ईसा मसीह के द्वारा एक नया धार्मिक पंत स्थापित किया गया । इसे ईसाई धर्म के नाम से जाना जाता है । ईसा मसीह ने ईसाई धर्म को सभी प्रकार के धार्मिक आडम्बरों से मुक्त रखा था फिर ईसा मसीह के पश्चात कुछ प्रमुख ईसाई संत आये उदाहरण के लिए सेन्टपॉल एवं सेंट अगस्ताईन इन संतों के द्वारा भी ईसाई धर्म की सादगी को बनाकर रखा गया। इन संतो ने मानव की मुक्ति के लिए आस्था पर बल दिया परंतु 8वीं सदी में दो अन्य संत आये पीटर लोम्बार्ड एवं टॉमस एकवीनाश इन संतों ने इस बात पर बल दिया कि मानव मुक्ति के लिए अच्छे कार्य पर बल दिये जाने की जरूरत है ।

परंतु अच्छे कार्य अर्थ इन्होंने पुरीहितवाद और संस्कारवाद लगाया अर्थात प्रत्येक ईसाई को पुरीहित का निर्देश स्वीकार करना चाहिए और उसे सात संस्कारों का पालन करना चाहिए । अतः इसी के साथ मध्ययुगीन चर्च व्यवस्था की शुरूआत हुई और रोमन कैथोलिक चर्च धार्मिक आडम्बर के गढ बन गये । इसे सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था के नाम से भी जाना जाता है । रोमन कैथोलिक चर्च का मुख्यालय में था जबकि शाखाएँ पूरे यूरोप में फैली हुई थी ।

<u>प्रभाव</u> -

रोमन कैथोलिक चर्च एक रूढ़िवादी शक्ति बन गयी तथा परिवर्तनों के मार्ग में खड़ा हो गया-

- चूंकि रोमन कैथोलिक चर्च का प्रसार सम्पूर्ण यूरोप में हो गया यह एक अखिल यूरोपीय व्यवस्था बन गयी क्षेत्रीय चर्च की निष्ठा रोम के साथ थी न की अपनी सरकार के साथ इसलिए सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था राष्ट्रीय राज्य के मार्ग में एक बडी बाधा बन गयी ।

- रोमन कैथोलिक चर्च नवीन विचारों के विकास एवं वैज्ञानिक चिंतन के विकास में बाधा थी । उदाहरण के लिए रोमन कैथोलिक चर्च का विकास रूढीवादी तर्कशास्त्र पर आधारित था । यह कहता था कि मनन और चिंतन ही ज्ञान प्राप्त करने का साधन है । इसी आधार पर रोमन कैथोलिक चर्च ने बन्द विश्व का विचार स्थापित किया था फिर जो कोई भी इस विचार का विरोध करता उसे धर्म विरोधी करार दे कर उसे दंडित कर दिया जाता था ।

यूरोपीय मध्य युग की विशेषताएँ क्या थी ?
यूरोपीय मध्यवर्ग की निम्नलिखित विशेषताएँ थी ।
राजनीतिक क्षेत्र - सामंतवाद, पवित्ररोमन साम्राज्य
आर्थिक क्षेत्र - उत्पादन की मेनर प्रणाली तथा गिल्ड प्रणाली
सामाजिक क्षेत्र में कुलीनता पर बल तथा समाज का विभाजन विशेषाधिकार प्राप्त तथा विहीन वर्ग में दर्शन - रूढीवादी तर्क शास्त्र
साहित्य - रोमानी दृष्टिकोण

Toppersnotes
Unleash the topper in you

आधुनिक पश्चिम का उद्भव
(14वीं सदी से 18वीं सदी)

व्यावसायिक क्रांति ⟶ पुनर्जागरण

धर्मसुधार आंदोलन- वाणिज्यवाद- राष्ट्रीय राज्य का उद्भव

- किन परिवर्तनों ने यूरोप में आधुनिक युग के आगमन का रास्ता तैयार किया ?

1. धर्म युद्ध - यह सही है मध्ययुगीन यूरोप में क्षेत्रीयता वाद का तत्व बहुत प्रभावी था । परंतु कुछ ऐसी घटनाएँ हुई जिन्होंने यूरोप के आर्थिक सामाजिक जीवन में नई गतिशीलता ला दी इनमें एक महत्त्वपूर्ण कारक था धर्मयुद्ध के मध्य पश्चिमी यूरोप से यूरोपीय सेना पश्चिम एशिया की ओर गयी इस कारण पश्चिम यूरोप से लेकर पश्चिम एशिया तक व्यापारिक मार्ग खुल गया । इससे व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला ।

2. कुस्तुनतुनिया की पतन - 1453 में तुर्कों ने बिजेंटियन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया पर कब्जा कर लिया । इसके परिणाम स्वरूप भारत और यूरोप के बीच सभी मार्ग अवरुद्ध हो गये जबकि उस समय यूरोप में भारतीय मसालों की अत्यधिक माँग थी तथा भारतीय मसालों पर इटैलियन व्यापारियों ने एकाधिकार कर लिया था। अतः स्पेन एवं पुर्तगाल जैसे देश वैकल्पिक मार्ग की खोज के लिए आगे बढे इन देशों ने अपना रास्ता अटलांटिक महासागर से खोजा एवं फिर अमेरिका तथा भारत की खोज हुई । तथा इन खोजों के परिणामस्वरूप यूरोपीय व्यापार का व्यापक विस्तार हुआ ।

व्यावसायिक क्रांति

- सामंतवाद का पतन ↓ राजतंत्र का उद्भव
- व्यापार एवं नगरों का विकास ↓ व्यापारी वर्ग अथवा मध्यवर्ग का विकास ↓ धर्म सुधार आंदोलन ↓ पुनर्जागरण का उद्भव
- वाणिज्यवाद ↓ राष्ट्रीय राज्य का उद्भव

व्यावसायिक क्रांति-

नई दुनिया की खोज के पश्चात यूरोप का विस्तार अन्य महाद्वीपों में होने लगा फिर पश्चिम में उत्तरी अमेरिका एवं लैटिन अमेरिका से लेकर पूर्व में भारत चीन दक्षिण एशिया तक व्यापारिक नेटवर्क कायम हुआ इस नेटवर्क के अंतर्गत अमेरिका से प्राप्त कीमती धातु की सहायता से पूर्वी वस्तुएँ खरीदी जाने लगी इन परिवर्तनों को व्यावसायिक क्रांति का नाम दिया जाता है । व्यावसायिक क्रांति के तहत व्यापार एवं उत्पादन की संरचना में निम्नलिखित परिवर्तन देखा गया -

1. जहाँ मध्य काल में वितरण का केन्द्र एक दुकान अथवा स्टोर था वहीं अब उसका स्थान रेगुलेटेड कम्पनी तथा ज्वाइंट कम्पनी ने ले लिया। रेगुलेटेड कम्पनी वह कम्पनी थी जिसका गठन व्यापारियों

का एक समूह मिलकर करता था जबकि ज्वाइंट कम्पनी वह थी जो अतिरिक्त पूँजी के लिए बाजार में शेयर जारी करती थी ।

2. उत्पादन की पद्धति में भी परिवर्तन आया अब उत्पादन की गिल्ड पद्धति का स्थान पुटिंग आउट पद्धति अथवा घरेलू पद्धति ने ले लिया पुटिंग आउट पद्धति को गिल्ड पद्धति तथा आधुनिक फैक्ट्री प्रणाली के बीच संक्रमण की अवस्था मानी जा सकती है ।
   - पुटिंग आउट पद्धति घर जाकर आर्डर लेते थे और निश्चित समय पर वस्तुएँ पहुँचाते थे । इस पद्धति में व्यापारियों को लाभ होता था ।
3. इस काल में मुद्रा एवं बैंकिंग का भी विकास हुआ ।
4. धीरे-धीरे भूमध्य सागर से व्यापार खिसक कर अटलांटिक महासागर की ओर चला गया अतः इटली के नगर राज्यों का पतन हो गया ।

सामंतवाद का पतन-

व्यावसायिक क्रांति के परिणामस्वरूप नगरों का विकास होने लगा साथ ही मुद्रा अर्थव्यवस्था का विकास हुआ अतः अब नगरों से ग्रामीण क्षेत्र में भी मुद्रा का प्रचलन शुरू हो गया । मुद्रा के प्रचलन के साथ सामंती व्यवस्था हिल गई क्योंकि वफादारी और सेवा पर आधारित संबंधों का स्थान मौद्रिक संबंधों ने ले लिया अब किसान भी जमीदार को सेवा देने के बजाय मुद्रा देना पसंद करते थे इस कारण सम्पूर्ण व्यवस्था में बिखराव आ गया । यही समय है जब एक नये वर्ग के रूप में व्यापारी वर्ग अथवा मध्य वर्ग का उद्भव हुआ। इस वर्ग का हित दृष्टिकोण एवं अभिरुचि कुलीन वर्ग से अलग थी । अतः इस वर्ग ने आगे के परिवर्तन का रास्ता तैयार कर दिया ।

पुनर्जागरण -

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है निद्रा से जागना, संभल कर बैठना आदि ।
- ग्रीक और लैटिन साहित्य में मानवतावाद था ।

14वीं सदी से 16वीं सदी के बीच यूरोपीय विद्वान बडी संख्या में ग्रीक और लैटिन साहित्य के अध्ययन की ओर आकर्षित हुए इस लिए आरम्भ में ऐसा माना गया कि पुनर्जागरण अध्ययन की एक पद्धति है परंतु सूक्ष्म परीक्षण करने पर यह ज्ञात होता है । पुनर्जागरण एक विशिष्ट दृष्टिकोण के विकास का नाम है। इस दृष्टिकोण को विकसित करने में एक से अधिक कारकों की भूमिका रही है । प्रथम व्यावसायिक प्रगति ने एक नये वर्ग को जन्म दिया यह वर्ग था व्यापारी अथवा मध्य वर्ग । इस वर्ग ने नई रूचि और दृष्टिकोण को प्रोत्साहन दिया दूसरे धर्म युद्ध के मध्य ईसाई योद्धा पूर्व की ओर गये इसके साथ पश्चिमी विश्व और पूर्वी विश्व के बीच विचारों का आदान-प्रदान हुआ । इसके कारण भी नवीन दृष्टिकोण को प्रोत्साहन मिला । 12वीं सदी के पश्चात यूरोप के अलग-अलग क्षेत्र में यथा लंदन पेरिस आदि में विश्वविद्यालय स्थापित होने लगे । इन विश्वविद्यालयों ने ही नवीन विचारों को फैलाने में अपना योगदान दिया ।

पुनर्जागरण का बल निम्नलिखित कारकों पर रहा-
- उत्सुकता एवं खुली दृष्टि का विकास
- साहसिक मनोभावों का विकास- इसने भौगोलिक खोज को बल प्रदान किया ।

- मानववाद-मानव के महत्व तथा उसके गरिमा पर बल दिया गया।
- व्यक्तिवाद- अब व्यक्ति के निजी सुख-दुःख की भावना को महत्व मिलने लगा सेलीनी नामक एक लेखक ने अपनी आत्मकथा ।
- धर्मनिरपेक्षता - यहाँ धर्मनिरपेक्षता का अर्थ वैसे पादरियों की आलोचना है, जिनकी कथनी और करनी में अंतर है ।

धर्म सुधार आंदोलन -

धर्म सुधार आंदोलन 16वीं सदी की सच्चाई है । धर्म सुधार आंदोलन दो रूपों में व्यक्त हुआ ।

1. प्रति धर्म सुधार आंदोलन- इसका उद्देश्य रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था में सुधार लाकर उस व्यवस्था को और भी मजबूत बनाना था ।
2. प्रोटेस्टेंट आंदोलन - प्रोटेस्टेंट आंदोलन ने रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया तथा ईसाई धर्म को आरम्भिक शिक्षा से जोडने का प्रयास किया मार्टिन लूथर एक जर्मन पादरी था उसमें रोम के पोप से कुछ प्रश्न करते हुए जर्मनी में ब्रिटेन वर्ग के चर्च पर 95 थिसिस (प्रश्न) दिये । यह रोमन कैथोलिक चर्च के विरूद्ध एक विद्रोह था । फिर अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रोटेस्टेट नेता प्रकट हुए जैसे-काल्विन, ज्यूंगली ।

   प्रोटेस्टेट आंदोलन का कारण धार्मिक भ्रष्टाचार को माना जाता है । यह कुछ हद तक सही भी है परन्तु एक तथ्य यह भी है। इस धार्मिक भ्रष्टाचार के विरूद्ध पहले ही आवाज उठने लगी थी और प्रति धर्म सुधार आंदोलन के अंतर्गत धार्मिक नहीं था । वस्तुतः इस विद्रोह को उभर रही (यूरोप में) नवीन शक्तियों के हित से जोड कर देखा जाना चाहिए तथा ये शक्तियों का मध्य वर्ग तथा यूरोप का महत्वकांक्षी राज्य तंत्र थी ।

   उभरते हुए मध्य वर्ग में प्रोटेस्टेंट आंदोलन को समर्थन दिया क्योंकि रोमन कैथोलिक चर्च का दर्शन व्यापारिक गतिविधियों के विरोध में जा रहा था उदाहरण के लिए रोमन कैथोलिक चर्च महाजनी और मुनाफाखोरी की आलोचना की थी । सूदखोरी और मुनाफाखोरी को समर्थन दिया । इससे व्यापार को प्रोत्साहन मिला । एक जर्मन समाजशास्त्री मैक्सवेबर ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है ।

   पूँजीवादी विकास ने प्रोटेस्टेट आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका तैयार की कि ऐसी स्थिति में समर्थन भी इसे प्राप्त हुआ जैसा की हम जानते है । उस काल के यूरोप के महत्त्वकांक्षी शासक अपने आप को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन उनके मार्ग में सबसे बडी बाधा सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था थी । प्रत्येक क्षेत्र में एक क्षेत्रीय चर्च स्थापित था और वह चर्च अपना संबंध मुख्यालय रोम से जोडता था । वह अपने आप को राष्ट्र एवं राज्य तंत्र से स्वतंत्र मानता था इसलिए जब तक चर्च राज्य के अधीन नहीं होता था जब तक राष्ट्रीय राज्य की स्थापना नहीं होती परंतु आगे प्राटेस्टेंट आंदोलन का लाभ उठाकर यूरोप के महत्वकांक्षी शासकों ने चर्च को राज्य के अधीन करना प्रारम्भ कर दिया । इस क्रम में महत्त्वकांक्षी शासकों के द्वारा प्रोटेस्टेंट आंदोलन को प्रोत्साहन दिया गया ।

   इस प्रकार हम देखते है कि प्रोटेस्टेंट आंदोलन के पीछे धार्मिक कारण कम तथा राजनीतिक आर्थिक कारण अधिक था ।

16वीं तथा 17वीं सदी तक व्यावसायिक क्रांति के स्वरूप में परिवर्तन आया तथा इसके अन्तर्गत कुछ नयी प्रवृत्तियाँ विकसित हुई इस परिवर्तन को वाणिज्यवाद के नाम से जाना गया वाणिज्यवाद राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित आर्थिक कार्यक्रम था । जिसका उद्देश्य था राज्य एवं राज्य तंत्र को शक्तिशाली बनाना ।

दूसरे शब्दों में बिखरते हुए सामंतवाद के बीच राज्य तंत्र का उद्भव हो रहा था तथा यूरोप के महत्वकांक्षी शासक अपने आप को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। इस क्रम में उनकी लडाई सामंतों के साथ चल रही थी । अतः उन्हे एक शक्तिशाली सेना एवं नौकरशाही गठित करने की जरूरत थी । इसके लिए धन की आवश्यकता थी । इसके लिए उन्होंने कर प्रणाली स्थापित की । अपने राज्य की समृद्धि बनाये रखने के लिए और निजी जीवन जीने की जरूरत पूरा करने के लिए एक सोची समझी योजना के तहत व्यावसायिक क्रांति के रूप में परिवर्तन कर दिया। अब राज्य के द्वारा व्यापार का नियंत्रण एवं विनियमन वाणिज्यवाद राज्यतंत्र एवं व्यापारिक वर्ग के गठन कर आधारित था ।

<u>वाणिज्यवाद का बल निम्नलिखित कारकों पर था</u>

1. कीमती धातुओं का संग्रह इसे बुलियनवाद के नाम से जाना जाता है ।
   उस काल में यूरोपीय देशों ने कीमती धातुओं के संग्रह पर बल दिया था ऐसा माना गया जिस राष्ट्र के पास जितना कीमती धातु है । वह उतना ही शक्तिशाली है ।
2. वाणिज्यवाद का बल अनुकूल व्यापार संतुलन पर था अर्थात् संबंधित राष्ट्र को निर्यात अधिक जबकि आयात कम करना चाहिए । तभी व्यापार संतुलन उसके पक्ष में रहेगा । वाणिज्यवादी दर्शन में इस बात पर बल दिया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की एक निश्चित मात्रा होती है। इसलिए किसी एक देश का व्यापारिक लाभ दूसरे राष्ट्र के व्यापार घाटे पर निर्भर करता है। अतः प्रत्येक राष्ट्र को चाहिए की वह व्यापार संतुलन अपने पक्ष में बनाये रखने के लिए कृत्रिम रूप में प्रयास करे यह संतुलन उसके प्रतिपक्षी के पक्ष में चला जायेगा । परंतु प्रश्न यह उपस्थित होता है कि प्रत्येक देश निर्यात करना चाहे आयात नहीं की अन्तर्राष्ट्रीय संचरण कैसे होगा ?
   इसलिए आगे एडम स्मिथ ने इस विचार का विरोध किया इतना ही नहीं वर्तमान में विश्व व्यापार संघठन (WTO) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में इन्ही त्रुटियों को दूर करने का प्रयास कर रहा है ।
3. उपनिवेशवाद- वाणिज्यवादी नीति के तहत यूरोपीय शासकों ने उपनिवेश वाद के प्रसार पर बल दिया उपनिवेशवाद का बल इस बात पर था उपनिवेश प्रांत देश के हित के लिए अर्थ रखता है ।
4. आर्थिक राष्ट्रवाद- वाणिज्यवाद का बल राष्ट्र को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना था ताकि आयात को सीमित किया जा सके इसलिए यूरोपीय राजतंत्र द्वारा उत्पादन के प्रोत्साहन पर भी बल दिया गया।
5. वाणिज्यवाद के प्रति व्यापारी वर्ग अथवा मध्य वर्ग का दृष्टिकोण-
   जब राजतंत्र के द्वारा वाणिज्यवादी नीति के तहत आर्थिक व्यापारिक मामलों में हस्तक्षेप किया गया तो आरम्भ में व्यापारी और मध्यवर्ग ने सहन किया क्योंकि उस समय तक यह वर्ग संगठित नहीं था ।

   परंतु जब 18वीं सदी तक मध्य वर्ग में शक्ति और आत्मविश्वास आ गया तो उसने वाणिज्यवाद का कडा विरोध किया । उदाहरण के लिए ब्रिटिश अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने मुक्त अर्थव्यवस्था का नारा दिया और फिर आगे अमेरिकी मध्य वर्ग ने ब्रिटिश सरकार की वाणिज्यवादी नीति के विरुद्ध एक व्यापक आंदोलन छेड दिया जो अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में तब्दील हुआ ।

6. राष्ट्रीय राज्य का उद्भव-

जैसा की हम देखते है । पिछले 2-3 शताब्दियों में होने वाले परिवर्तनों ने राष्ट्रीय राज्य के उद्भव को संभव बनाया । ये उद्भव थे- सामंतवाद का पतन, प्रोटेस्टेट आंदोलन, वाणिज्यवाद का विकास आदि । वाणिज्यवाद ने राष्ट्रीय राज्य के आर्थिक आधार को मजबूत किया अब यूरोपीय शासक के द्वारा स्थायी सेना स्वतंत्र नौकरशाही स्थापित किया जा सका कर प्रणाली को सुदृढ किया गया । इस प्रकार राष्ट्रीय राज्य अस्तित्व में आया। यह प्रक्रिया वर्षीय युद्ध एवं वेस्टफेलिया की संधि के बिना पूरी हो सकती थी ।

7. 30 वर्षीय युद्ध (1618-1648)

30 वर्षीय युद्ध के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। यह एक धार्मिक कारण से आरम्भ होकर गैर धार्मिक मुद्दे पर समाप्त हुआ। यह यूरोप की राजनीति में यथार्थवाद का सूचक था क्योंकि इस युद्ध के मध्य धार्मिक कारक द्वितीयक बन बया जबकि राजनीतिक और आर्थिक मुद्दा प्रधान बना रहा इस में फ्रांस का दबदबा और महत्व बढ गया, इस युद्ध की समाप्ति पर वेस्टफेलिया की संधि हुई। वेस्टफेलिया के संधि के साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की शुरूआत हुई ।

इस संधि के प्रमुख प्रावधान थे। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अपना योगदान दिया-

i. जहाँ पहले यूरोप में सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था और पवित्र रोमन साम्राज्य के अंतर्गत यूरोपीय व्यवस्था एकरूपता को प्रदर्शित करती थी वहीं अब यूरोपीय व्यवस्था में बहुपक्षीयता आ गई क्योंकि इसमें किसी एक राज्य के महत्व को स्वीकार न करके विभिन्न राज्यों के महत्वों स्वीकार किया गया । यह तय हुआ चाहे राज्य का आकार जो भी हो परंतु अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में सभी राज्य समान हैं ।

ii. इस युद्ध के पश्चात युद्ध के विकल्प के रूप में कूटनीति की शुरूआत हुई साथ ही पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय कानून अस्तित्व में आये ।

iii. सबसे बढकर जब यूरोप में धर्म की सत्ता कमजोर पडी तो धर्मनिरपेक्ष राजनीति की शुरूआत हुई ।

iv. पवित्र रोमन साम्राज्य के पतन ने एक और यूरोपीय राजनीति में बहुराज्यीय व्यवस्था की शुरूआत की तथा वही इसने फ्रांस के उत्थान का रास्ता भी तैयार कर दिया ।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर इसका गहरा प्रभाव देखा गया इस संधि के पश्चात यूरोपीय राज्य प्रणाली की शुरूआत हुई तथा शक्ति संतुलन नीति का प्रमुख लक्षण बन गई। जब भी कोई एक यूरोपीय राष्ट्र अधिक शक्तिशाली बनकर उभरता तो कई यूरोपीय देश मिलकर शक्ति संतुलित करने का प्रयास करते वहीं 18वीं सदी के आरम्भ में ब्रिटेन एक प्रमुख सामुद्रिक शक्ति बन गया तथा ब्रिटेन यूरोप में शक्ति संतुलन का सबसे बडा समर्थक था ।

यूरोपीय राज्यव्यवस्था-

कोई एक राष्ट्र अधिक शक्तिशाली होने का प्रयत्न करता तो फिर कई राष्ट्र मिलकर शक्ति संतुलन को बनाये रखने का प्रयास करते ऐसी ही एक घटना फ्रांस के शासक लुई 14वें के अधीन हुई थी । वह यूरोप पर अपने वर्चस्व को स्थापति करने का प्रयास कर रहा था तभी ब्रिटेन के नेतृत्व में एक यूरोपीय लीग का गठन हुआ जिसने लुई 14वें की शक्ति को संतुलित कर दिया आगे हम यही स्थिति नेपोलियन के विरूद्ध फ्रांस को पाते हैं ।

यूरोप में राष्ट्रीय राज्य तथा राजा का राष्ट्रवाद

वेस्टफलिया की संधि में लिस राष्ट्रीय राज्य को स्वीकृत मिली थी । वह यूरोपीय शासक की पहचान पर आधारित था सभी अंतर्राष्ट्रीय संधि एवं समझौते राजा के द्वारा संचालित किये जाते उसमें जनता की कोई भूमिका नहीं होती परंतु आगे फ्रांस की क्रांति ने इस राष्ट्रीय राज्य को हिलाकर रख दिया । इस क्रांति ने जनता के राष्ट्रवाद पर बल दिया। इस कारण से यूरोपीय जनता जागृत हो गई थी । इसलिए क्रांति के तुरंत बाद वियना में एक यूरोपीय कांग्रेस को स्थापित कर फिर एक बार बेस्टफेलिया व्यवस्था पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया गया था, किंतु यह कांग्रेस अपने उद्देश्य में सफल रही ।

मॉडल प्रश्न

- 18वीं सदी में उन कारकों की व्याख्या कीजिए जिनके कारण राष्ट्रीय सीमा का अंकन संभव हुआ तथा राष्ट्रीय राज्य अस्तित्व में आये ?

  यूरोपीय मध्ययुगीन व्यवस्था राष्ट्रीय राज्य के उद्भव में एक बडी बाधा थी यह मध्ययुगीन व्यवस्था तीन संस्थाओं पर आधारित थी ये संस्थाएँ थी । सामंतवाद सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था तथा पवित्र रोमन साम्राज्य राष्ट्रीय राज्य के उद्भव के लिए इस संस्थाओं का विघटन आवश्यक था । 16वीं सदी और 18वीं सदी के बीच परिवर्तन की जो प्रक्रिया चली इससे इस संस्थाओं का विघटन अवश्यम्भावी हो गया ।

1. सामंतवाद- आंतरिक कारण सामंतवाद का पहले ही शुरू हो चुका था फिर जब व्यावसायिक क्रांति आरम्भ हुई तो फिर मुद्रा अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ मुद्रा के प्रवेश के कारण सामंती संबंधों में बदलाव आया और फिर सामंतवाद गया अब तक इन शासकों की स्थिति श्रेष्ठ सामंत की तरह बनकर रह गयी थी वे सैनिक और नौकरशाही के मामले में अधीनस्थ सामंतों पर निर्भर थे ।
   राष्ट्रीय राज्य का आधार मजबूत किया । फिर उन्होंने आधुनिक कर प्रणाली स्थायी सेना और व्यावसायिक नौकरशाही का गठन किया ।
2. सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था-
   राष्ट्रीय राज्य के उद्भव में एक बडी बाधा थी, क्योंकि क्षेत्रीय चर्च अपने को राष्ट्रीय राज्य से ऊपर मानते थे, परंतु प्रोटेस्टेंट आंदोलन ने सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था में दरार उत्पन्न कर दी इसका फायदा उठाकर राजा ने चर्च को राज्य के अधीन कर दिया तथा उसको राष्ट्रीय चर्च घोषित कर दिया अतः राष्ट्रीय सीमा अधिक स्पष्ट हुई ।
3. पवित्र रोमन साम्राज्य- ये अखिल यूरोपीय संस्था बन गई थी। उत्तर से दक्षिण तक एक बडा भू-भाग इसके अधीन था । जब तक इस संस्था में बिखराव नहीं होता तब तक राष्ट्रीय राज्य का निर्माण सम्भव नहीं था । यह कमी 30 वर्षीय युद्ध ने पूरी कर दी इस युद्ध के पश्चात् पवित्र रोमन साम्राज्य का पतन हो गया और वेस्ट फेलिया की संधि के साथ राष्ट्रीय राज्य व्यवस्था को मान्यता मिल गयी। इसी के साथ यूरोपीय राज्य प्रणाली की शुरूआत हुई ।
   इस प्रकार उपयुक्त कारकों ने यूरोप में राष्ट्रीय राज्य प्रणाली के विकास का रास्ता तैयार कर दिया ।

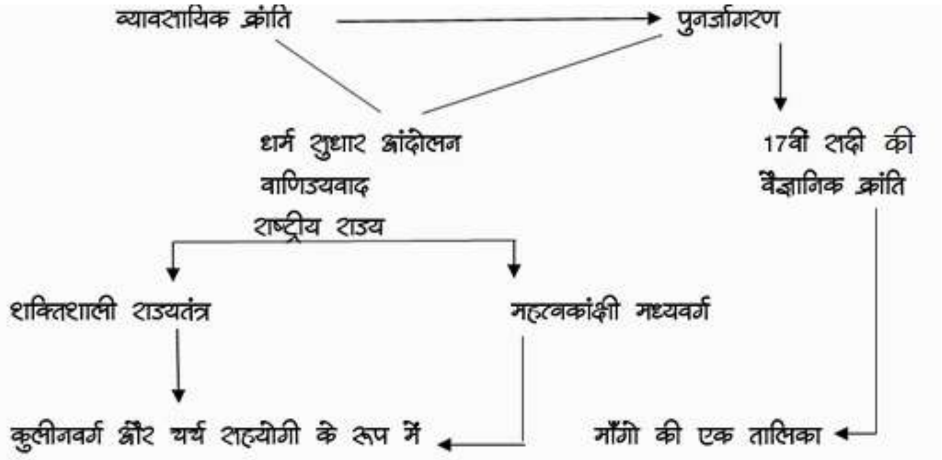

प्रबोधन का शाब्दिक अर्थ है एक लम्बे काल के अन्धकार के पश्चात् प्रकाश का युग यह अंधकार था अंधविश्वास, असहिष्णुता का तथा अतीत के प्रति दासता बोध का प्रबोधन ने तर्कवाद तथा मानव प्रगति पर अत्यधिक बल दिया प्रबोधन को 18वीं सदी की बौद्धिक क्रांति का नाम दिया जाता है ।

<u>प्रबोधन का सामाजिक आधार</u>–

प्रबोधन को हम मध्यवर्गीय विचारधारा कह सकते है जिसे उदारवाद के नाम से जाना जाता है। उसका आधार प्रबोधन ने ही तैयार किया था फिर आगे अमेरिकी क्रांति, फ्रांस की क्रांति आदि ने इस विचारधारा का और भी विस्तार किया ।

वस्तुतः प्रबोधन को 18वीं सदी के यूरोप में बदलते हुए वर्गीय समीकरण तथा वैज्ञानिक क्रांति के संदर्भ में समझने की जरूरत है । जैसा की पीछे हमने देखा कि कुलीन और सामंतों के विरुद्ध यूरोपीय राज्य तंत्र एवं मध्यवर्ग के बीच एक प्रकार का गठबंधन बन गया था इसे वाणिज्यवाद के नाम से जाना गया परंतु 18वीं सदी तक राजतंत्र एक निरंकुश शक्ति के रूप में स्थापित हो गया था वही दूसरी ओर अब मध्य वर्ग एवं कुलीन वर्ग के विरुद्ध चर्च के साथ सांठ-गांठ कर ली क्योंकि अब कुलीन और चर्च दोनों की शांति टूट चुकी थी और ये अब राजतंत्र के लिए खतरा नहीं रह गये थे दूसरी तरफ मध्य वर्ग अपने अधिकारों के प्रति सजग था इसलिए उसने राज्य तंत्र कुलीन वर्ग चर्च के समक्ष मांगों की एक तालिका रख दी।

एक तरह से अगर देखा जाये तो यही प्रबोधन है फिर मध्यवर्ग द्वारा अपनी माँगे उठायी जा रही थी तो उसे वैज्ञानिक ज्ञान का भी समर्थन मिला विज्ञान ने प्रकृति पर से रहस्य का पर्दा हटा दिया था तथा यह ज्ञात हो गया था इस प्रकृति को कोई ईश्वर नहीं चला रहा फिर मध्य वर्ग को इस बात का बल मिल गया जब प्रकृति के मामले में ईश्वर का हस्तक्षेप नहीं तो फिर राजनीति आर्थिक मामले में राजतंत्र कुलीन वर्ग का हस्तक्षेप क्यों ?

1. प्रबोधन का यह कहना था कि मूलभूत राजनीतिक आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक तरीके अथवा वैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेकर ही सम्भव है । वह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान के नियमों को लागू करना चाहता था ।
2. प्रबोधन का बल इस बात पर था कि राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं को स्वतंत्र रूप में कार्य करना चाहिए इसमें बाहय हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए ।
3. प्रबोधन ने ''प्रगति तर्कवाद तथ आनन्द'' जैसे शब्दों पर विशेष बल दिया ।

4. प्रबोधन का यह मानना था कि तर्क से परिचालित मनुष्य का भविष्य उज्जवल तथा तर्क के माध्यम से मानव अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करेगा ।
(प्रबोधन के इस चिंतन के आधार पर आधुनिकतावाद का आगमन हुआ था । परंतु उत्तर आधुनिकतावाद की विचारधारा को चुनौती दी उसने यह घोषित किया न तो एक सत्य है और न ही सत्य की ओर जाने के लिए कोई एक मार्ग है ।)
प्रमुख चिंतक- वाल्टेयर, दिदरो मॉंटेस्क्यू, जॉन लॉक, रूसो आदि कई बातों में अन्य चिंतको से अलग था ।

अन्य प्रबुद्ध चिंतक एवं रूसो में अंतर

1. जहाँ अन्य प्रबुद्ध चिंतक तर्कवाद पर बल देते थे वही रूसो तर्कवाद को अस्वीकार करता था तथा भावावेश पर बल देता था उसका कहना था कि सभ्यता एवं विज्ञान के नाम पर लोगों ने अपने भावावेश को खो दिया है ।
2. यहां अन्य चिंतकों ने व्यक्ति की स्वतंत्रता पर बल दिया वहीं रूसो ने समुदाय की शक्ति की बात की इसलिए रूसो की विचारधारा से राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला, क्योंकि समुदाय की शक्ति का अर्थ राष्ट्र की शक्ति लगाया गया ।
3. जहाँ अन्य प्रबुद्ध चिंतक सीमित राज्य तंत्र की माँग कर रहे थे वहीं रूसो प्रजातंत्र समर्थक था उसने यह घोषित किया सामान्य इच्छा ही प्रभु की इच्छा है । अर्थात् सम्प्रभुता जनता में निवास करती है । इस प्रकार रूसो राजा के राष्ट्रवाद के समांतर जनता के राष्ट्रवाद का मॉडल प्रस्तुत करता है ।

पुनर्जागरण एवं प्रबोधन में कोई अंतर था ?

पुनर्जागरण एवं प्रबोधन मध्यवर्गीय दृष्टिकोण को रेखांकित करता है । परंतु प्रबोधन पुनर्जागरण का वैचारिक अगला पडाव है। इसलिए प्रबोधन की दृष्टि में अधिक प्रवणता है । दोनों में कुछ अंतर भी है। पुनर्जागरण का संबंध मध्यकाल से बना रहा था किंतु प्रबोधन ने मध्यकाल से अपना संबंध तोड लिया था । उसी प्रकार पुनर्जागरण ग्रीक और लैटिन क्लासिक साहित्य से प्राप्त ज्ञान को बहुत महत्वपूर्ण मानता था । वही प्रबोधन ने तर्कवाद को ज्ञान का आधार माना ।
प्रबोधन का राजनीतिक आर्थिक सामाजिक दर्शन-

<u>राजनीतिक</u>-

प्रबोधन निरंकुश राजतंत्र पर अंकुश लगाने की बात करता तथा मध्यवर्ग के बीच मताधिकार का विस्तार चाहता था इसे सीमित राजतंत्र के नाम से जाना गया ।

<u>आर्थिक</u>-

प्रबोधन ने वाणिज्यवाद पर चोट की तथा अर्थव्यवस्था पर बल दिया । इस काल का एक प्रमुख आर्थिक चिंतक एडम स्मिथ था ।
एडम स्मिथ ने यह घोषित किया जैसे प्रकृति के अपने शाश्वत नियम है । उसी प्रकार बाजार के भी अपनी शाश्वत नियम है ये नियम है मांग और पूर्ति के नियम उसका कहना था बाजार एक अदृश्य हाथ चलाता है । अतः बाजार के मामले में सरकार को हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं है ।

उसने वाणिज्यवाद की धारणा को अस्वीकार कर दिया कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कुछ ही लोगों को लाभ मिलता है। जबकि अन्य लोगों को घाटा होता है। उसके अनुसार अगर ऐसा होता तो जिन लोगों को घाटा

होता है वे बाजार से निकल जाते फिर अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था ठप हो जाती । वहीं एडम स्मिथ का ये विश्वास था कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में सभी को लाभ मिलता है । बशर्ते मुक्त व्यापार की नीति का पालन किया जाये दूसरे शब्दों में अगर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से सभी कृत्रिम अवरोध घटा लिया जाये फिर सभी को लाभ मिलेगा ।

A :	IIx	IIy	B
X	IU-x	IU-y	y
Y	10U-y	10U-1X	X

<u>सामाजिक</u>– सामाजिक स्तर पर प्रबोधन ने व्यक्तिवाद पर बल दिया व्यक्ति के स्वतंत्रता की बात की।

<u>सीमाएँ</u> –

प्रबोधन ने समाज के एक छोटे वर्ग को प्रभावित किया जन सामान्य इससे दूर ही रहे स्वयं प्रबुद्ध चिंतक भी प्रबोधन का प्रसार जनसामान्य के बीच नहीं करना चाहते थे । क्योंकि उन्हें डर था अगर यह विचारधारा जन सामान्य के बीच फैल गयी तो फिर यह उग्र क्रांति का रूप ले लेगी ।

प्रबोधन की यह माँग थी कि सरकार जनता के लिए होना चाहिए जनता के द्वारा नहीं इसका अर्थ है वह सीमित राजतंत्र चाहते थे प्रजातंत्र नहीं ।

अमेरिकी क्रांति

प्रबोधन में मध्यवर्ग ने अपनी आकांक्षाओं को अभिव्यक्त किया था तथा पुरानी व्यवस्था को चुनौती भी दी थी किंतु इसका सबसे आरंभिक प्रभाव ब्रिटेन के उत्तरी अमेरिकी पर देखा गया वहाँ मध्यवर्ग ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक क्रांति छेड दी जिसे अमेरिकी क्रांति के नाम से जाना जाता है। प्रथम यूरोप मॉडल अमेरिकी समाज से प्रभावित था जहाँ लोग अपेक्षाकृत परम्परा के बंधन से मुक्त होकर अधिक स्वतंत्र रूप में सोचते और कार्य करते है।

कुलीन+भद्रजन

व्यापारी+तस्कर+बुद्धिजीवी छात्र, राजनीतिक नेता किसान+श्रमिकदास+रेड इंडियन

इसलिए इस प्रबोधन ने अमेरिकी चिंतकों को अधिक प्रभावित किया दूसरे प्रबोधन ने वाणिज्यवाद पर करारी चोट की थी जैसा की हम जानते है। 1776 ई. में एडम स्मिथ ने वाणिज्यवाद पर हमला करते हुए वेल्थ ऑफ नेशन्स का प्रकाशन किया था। 1776 ई. में ही अमेरिकी क्रांति आरम्भ हुई अमेरिकी क्रांति वाणिज्यवाद के विरुद्ध विद्रोह था इस प्रकार प्रबोधन एवं अमेरिकी क्रांति दोनों के लक्ष्य एक-दूसरे से जुड गये।

<u>अमेरिकी क्रांति एक क्रांति थी अथवा स्वतंत्रता आंदोलन</u> -

अमेरिकी क्रांति के पश्चात अमेरिकी उपनिवेशों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई अतः सामान्यतः आंदोलन के रूप में देखा जाता है। परंतु इसे स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ क्रांति कहना भी उचित है। उसके निम्नलिखित कारण है -

प्रथम इसके पश्चात अमेरिका के आर्थिक सामाजिक ढाँचे में बदलाव आया।
दूसरे इसने न केवल अमेरिका में बदलाव लाया अपितु इसने यूरोप में भी व्यापक बदलाव को प्रोत्साहन दिया।
क्या अमेरिकी क्रांति को मध्यवर्गीय क्रांति की संज्ञा दे सकते है ?
अमेरिकी क्रांति को मध्यवर्गीय क्रांति कहना उचित है। निम्नलिखित आधार पर हम इसे मध्यवर्गीय क्रांति कह सकते है। प्रथम यद्यपि इस क्रांति के मध्य विभिन्न वर्गों की भागीदारी रही परंतु हमेशा नेतृत्व मध्यवर्ग के हाथों में रहा दूसरे क्रांति के मध्य जो परिवर्तन हुए वे परिवर्तन मध्यवर्ग के हितों के अनुकूल थे।
<u>अमेरिकी क्रांति के कारण</u>-
एक तरह से अगर देखा जाये तो अमेरिकी क्रांति ब्रिटिश वाणिज्यवाद के विरुद्ध अमेरिकी पूँजीवाद का विद्रोह था। ब्रिटिश वाणिज्यवादी नीति जहाज रानी कानून अथवा नौपरिवहन कानून के रूप में व्यक्त हुआ।

17वीं सदी में ब्रिटिश सरकार के द्वारा अनेक नौपरिवहन कानून लाये गये इन कानूनों के माध्यम से अमेरिकी व्यापार पर ब्रिटिश सरकार का कठोर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया गया। इन कानूनों के अनुसार निम्नलिखित परिवर्तन लाये जाने थे यथा अगर कोई अमेरिकी बस्ती आयात अथवा निर्यात करती तो वह आयात अथवा निर्यात ब्रिटिश जहाज अथवा अमेरिकी जहाज में होता सबसे बढकर ऐसा भी प्रावधान

लाया गया कि अगर एक बस्ती से दूसरी बस्ती को भी निर्यात को विदेश व्यापार में शामिल किया जायेगा तथा उस निर्यात के बदले संबंधित बस्ती को ब्रिटेन को चुँगी देनी होगी ।

1. अमेरिकी व्यापारी नौपरिवहन कानून से क्षुब्ध थे क्योंकि ये कानून अमेरिकी व्यापार के विकास में बाधा थे जब तक ये नौपरिवहन कानून होते तब तक अमेरिका में स्वतंत्र रूप में पूँजीवादी विकास नहीं हो सकता था ।
2. अमेरिकी बस्तियाँ अब उपनिवेश के स्तर से ऊपर उठकर राष्ट्र का आकार लेने लगी थी । अमेरिकी नेताओं ने ब्रिटिश सरकार को इस बात का एहसास कराने का प्रयास किया ।
   उदाहरण के लिए एक प्रसिद्ध अमेरिकी नेता बेंजामिन फ्रैंकलिन ने अमेरिकी वस्तुओं बस्तियों के सम्मेलन में यह घोषणा की थी अमेरिका एक बचता हुआ राष्ट्र है परंतु ब्रिटिश सरकार अमेरिकी बस्तियों की इस नई पहचान को स्वीकार करने के लिए तैयार थी ।
3. अमेरिका में विभिन्न वर्गों के हित क्रांति से जुड रहे थे उदाहरण के लिए अमेरिका में छात्र एवं बुद्ध जीवी इसलिए आंदोलन के पक्ष में थे क्योंकि उन पर गणतंत्रवादी विचारों का प्रभाव था । राजनीतिक नेता भी आंदोलन के पक्ष में थे, क्योंकि वे अपना भविष्य स्वतंत्र अमेरिका में देख रहे थे अमेरिकी व्यापारी आंदोलन के पक्ष में थे क्योंकि वे नौपरिवहन कानून से असंतुष्ट थे इनके अतिरिक्त तस्कर भी आंदोलन के पक्षपाती थे क्योंकि तस्करी विरोधी कानून को कठोरता से लागू किये जाने के कारण उन्हें परेशानी हो रही थी अंत में वर्जिनिया के तंबाकू उत्पादक क्रांति के पक्षधर थे क्योंकि ये नयी भूमि की तलाश में पश्चिम की ओर विस्तार करना चाहते थे । जबकि ब्रिटिश सरकार ने पश्चिम की ओर विस्तार करने पर पाबंदी लगा दी थी ।
4. अमेरिकी क्रांति में एक संवैधानिक मुद्दा भी निहित था। ब्रिटिश लोग संसदीय सर्वोच्चता की अवधारणा पर विश्वास रखते थे और यह मानते थे जितनी भी संस्थाएँ है वे संस्था ब्रिटिश संसद के अधीन है । वहीं अमेरिकी लोग प्राकृतिक कानून अवधारणा में विश्वास करते थे और यह मानकर चलते थे कि कुछ ऐसे प्राकृतिक अधिकार है जो मानव को जनजात के रूप में प्राप्त होते है ये अधिकार अहरणीय है । ब्रिटिश संसद भी इन अधिकारों का उल्लंघन नहीं कर सकती इसी अवधारणा से प्रेरित होकर अमेरिकी लोगों ने अपने विधान में मौलिक अधिकार का प्रावधान लाया था ।

तत्कालीन कारण :-

ब्रिटिश प्रधानमंत्री जार्ज ग्रेनविले ने जब अमेरिकी खाते का अवलोकन किया तो पाया कि ब्रिटेन का अमेरिका पर जो खर्च था वह वहाँ से प्राप्त होने वाली आय से कही अधिक था अतः ग्रेनविले ने ब्रिटिश आर्थिक हित में अमेरिकी बस्तियों का प्रभावकारी रूप में उपयोग करने का निर्णय लिया ग्रेनविले ने अमेरिका के संबंध में निम्नलिखित निर्णय लिये-

1. उसने नौपरिवहन कानून को कडाई से लागू करने का निर्णय लिया ।
2. उसने तस्कर विरोधी कानून को लागू करने पर विशेष बल दिया ।
3. ग्रेनविले ने स्टाम्प एक्ट तथा शुगर एक्ट जैसे नये कर लगाये ।

परन्तु अमेरिकी बस्तियों के प्रतिनिधि न्यूयार्क नामक स्थान पर एकत्रित हुए और उन्होंने ब्रिटिश करारोपण नीति की आलोचना करते हुए अपनी प्रसिद्ध घोषणा लायी 'प्रतिनिधित्व के बिना कर नहीं'